पंजीयन संख्या : 68939/98 अंक - 27, वर्ष 24

ज्ञान तत्व

समाज शास्त्र | अर्थ शास्त्र | धर्म शास्त्र | राजनीति शास्त्र

440

-: सम्पादक :-

बजरंग लाल अग्रवाल

रामानुजगंज (छ.ग.)

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 01.02.2024

प्रकाशन की तारीख 16.12.2023

पाक्षिक मूल्य - 2.50/- (दो रूपये पचाय पैसे)

''शराफत छोड़ो, समझदार बनो''

''सुनो सबकी, करो मन की''

''समस्याओं के प्रणेता, कर कानून नेता''
''समाधान का आधार ज्ञान यज्ञ परिवार''

''चाहे कोई अत्याचार, नहीं करेंगे नही सहेंगे''
''हमें सुराज्य नही, स्वराज्य चाहिए''

विविध विषयों पर मुनि जी के लेख

तानाशाही की भूख बढ़ाती है अराजकता: Margdarshak.info

मैंने कई बार लिखा है कि जब लोकतंत्र अराजकता की दिशा में बढ़ता है तो तानाशाही की भूख पैदा होती है। वर्तमान भारत में यही हो रहा है। जब संसद मछली बाजार बन जाए और कुछ लोग गुंडागर्दी करने पर उतारू हो जाए तो उसका और कोई समाधान नहीं हो सकता। वर्तमान भारत की संसद ने यह महसूस किया कि अब अराजकता को रोकने की शुरुआत संसद से ही करनी चाहिए। इसलिए प्रतीक स्वरूप संसद में गुंडागर्दी करने वालों को बड़ी संख्या में संसद में जाने से रोक दिया गया है। मेरे विचार से यह कार्य बहुत पहले ही करना चाहिए था। पिछले 5 वर्षों से सांसद को चलने नहीं दिया जा रहा है, गुंडा तत्व संसद में अराजकता पैदा कर रहा है। इसलिए वर्तमान सरकार ने जो शुरुआत की है वह भले ही देर से उठाया गया कदम हो लेकिन बहुत अच्छा है। जनता को इशारा करने के लिए शुरूआत संसद से ही करनी चाहिए। संसद से जिस तरह लोगों को निकाला गया है मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ।

बृजभूषण शरण सिंह की जीत के मायने: Margdarshak.info

कुछ दिन पहले ही खेल चुनाव संपन्न हुए। यह चुनाव बेहद महत्वपूर्ण हो गए थे क्योंकि इस चुनाव में सत्तारूढ़ दल और विपक्ष के बीच एक महत्वपूर्ण टकराव हो रहा था। सब लोगों को पता है कि बृजभूषण शरण सिंह एक दबंग नेता है जो भारतीय जनता पार्टी के साथ जुड़े हुए हैं। बृजभूषण शरण सिंह को परेशान करने के लिए विपक्षी दलों ने सबसे अच्छा मार्ग यह चुना कि, उन्होंने एक महिला को इनके खिलाफ खड़ा कर दिया और भारत का पूरा विपक्ष उस महिला खिलाड़ी के साथ जंतर मंतर पर आंदोलन करने लगा। उस महिला खिलाड़ी ने भी बहुत नीचे उतरकर आरोप लगाए और बृजभूषण शरण सिंह को बदनाम करने के साथ-साथ परेशान करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। लेकिन बृजभूषण शरण सिंह डटे रहे और काफी लड़ाई के बाद कल जब चुनाव हुआ तो बृजभूषण शरण सिंह के सारे लोग चुनाव में भारी बहुमत से जीत गए और विपक्षी दलों को बहुत शर्मिंदगी उठानी पड़ी। वह महिला तो इतनी अधिक गलत है कि उसने तो धमकी दी है कि मुझे जो चुनाव में हराया गया तो मैं अब खेल छोड़ दूंगी, कुश्ती छोड़ दूंगी। पच्चीस तरह का नाटक करने लगी और उस महिला को देखकर ऐसा लगता है कि अब विपक्ष केवल नाटक ही कर सकता है। विपक्ष न तो संसद में कुछ कर सकता है न राजनीति करने लायक है। यह चुनाव सत्तारूढ़ दल की विजय नहीं है बल्कि विपक्षी दलों की हार है। खासकर उन धूर्त

महिलाओं की हार है जो वर्तमान कानून का लाभ उठाकर किसी भी पुरुष को कभी भी लांछित कर देती है।

अराजकतावादी संसदों को संसद में भेजना उचित नहीं: Margdarshak.info

पिछले दिनों मैने संसद की कार्यवाही टीवी पर देखा। तो मुझे इस बात से बहुत आश्चर्य हुआ कि दो दिनों से संसद ठीक तरह काम कर रही है। पिछले 5-6 वर्षों से संसद में गुंडागर्दी हो रही थी, थोड़े से लोग संसद को चलने नहीं दे रहे थे। इसलिए संसद की कार्यवाही ठप हो जाती थी। किसी भी विषय पर विचार विमर्श नहीं होता था। प्रस्ताव पारित हो जाते थे और हर बार यही होता था। लेकिन मुझे इस बात का आश्चर्य है कि जब नरेंद्र मोदी और सत्ता पक्ष यह बात जानते थे कि इस सारी समस्या का यह छोटा सा समाधान है कि इन अराजकतावादी तत्वों को संसद से निकाल दिया जाए। तो यही उपाय इन्होंने पहले क्यों नहीं कर लिया। अगर पहले ही इन अराजकतावादियों को जंतर-मंतर भेज दिया जाता तो संसद 5 वर्षों से ठप नहीं होती। मैं कई वर्षों से देख रहा हूँ कि संसद केवल हंगामा करने के लिए आयोजित होती थी और कोई काम नहीं होता था। लेकिन अब मुझे खुशी है कि पिछले कुछ दिनों से संसद ठीक चल रही है। मेरा आम जनता से निवेदन है कि इस प्रकार की अराजकता करने वालों को संसद में भेजना ही उचित नहीं है। यह जंतर मंतर पर ही रहे तो ज्यादा उपयुक्त हैं।

देश की संसद से 150 सांसद बाहर निकाल दिए गए। बाहर निकलते ही उनके व्यवहार में इतना बदलाव दिखा कि आश्चर्य होता है। जो सांसद संसद के अंदर बेंचों पर चढ़कर चिल्ला रहे थे, जो वहां अध्यक्ष को फोटो दिखा रहे थे, वही सांसद संसद से बाहर निकलते ही गांधी मूर्ति के सामने मौन खड़े थे। समझ में नहीं आता कि जिस संसद के अंदर उन्हें अनुशासित रहना चाहिए था वही संसद के बाहर मुंह बंद करके खड़े हैं। यह आश्चर्यजनक है, विश्वास नहीं होता कि यही सांसद संसद के अंदर गुंडागर्दी कर रहे होंगे। यह तो गांधी के सामने मुंह बंद करके चुपचाप खड़े हैं। सोचने की बात है कि जब गांधी मूर्ति का इतना प्रभाव है तो गांधी जी का कितना रहा होगा यह आप कल्पना ही कर सकते हैं।

अरविन्द केजरीवाल का भ्रष्टाचार के आरोपों पर चुप्पी गलत: Margdarshak.info

दिल्ली सरकार के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कल कहा है कि वह किसी से डरने वाले नहीं है क्योंकि उन्होंने जो भी किया है वह ठीक किया है।

दूसरी ओर कल ही दिल्ली के उपराज्यपाल ने यह कहा कि शराब घोटाला तो ईडी जांच कर रही है लेकिन अरविंद केजरीवाल सरकार ने नकली दवाओं तथा मोहल्ला क्लिनिको में जो भ्रष्टाचार किया है, उसकी भी जांच कराई जाएगी। जनता के बीच में अरविंद केजरीवाल ने ऐसा कोई प्रत्यक्ष सबूत नहीं दिया जिससे यह स्पष्ट हो सके कि शराब घोटाले या मोहल्ला क्लीनिक के संबंध में लगाए गए आरोप झूठे हैं। आरोप लगाने वालों ने अपने पक्ष में मीडिया के सामने जो प्रमाण पत्र प्रस्तुत किये उनमें से किसी एक का भी खंडन अरविंद केजरीवाल नहीं कर सके। अरविंद केजरीवाल सिर्फ एक ही बात दोहराते रहे कि उन्हें चुनाव से रोकने के लिए भी भारतीय जनता पार्टी षड्यंत्र कर रही है लेकिन अरविंद केजरीवाल ने यह नहीं बताया कि उनके कट्टर ईमानदार कई साथी न्यायपालिका से भी जमानत लेने में असफल क्यों है? अरविंद जी यह भी नहीं बता सके कि बहुत पहले से वह कहते रहे हैं कि अरविंद जेल जाने से कभी नहीं डरता। अब जब वास्तव में जेल जाने का समय आया है तो अरविंद इतना भाग क्यों रहे हैं। विपश्यना कर लेने मात्र से उनकी ईमानदारी प्रमाणित नहीं हो जाएगी। ईमानदारी प्रमाणित करने के लिए तो उन्हें या तो मीडिया के सामने आकर आरोपी पर स्पष्टीकरण देना चाहिए या जेल जाकर न्यायालय से अपने को निर्दोष सिद्ध करना चाहिए। पिछले घटनाक्रम के बाद अरविंद केजरीवाल की छवि में जो गिरावट आ रही है वह अरविंद के लिए दूरगामी घातक होगी।

“लोकतंत्र की हत्या” राजनीतिक झूठ: margdarshak.info

वर्तमान समय में भारत में राजनीति का स्तर कितना गिर गया है यह बात इस बात का प्रमाण है कि राजनेता अधिक से अधिक झूठ बोलने में अपने को माहिर माने लगे हैं। राजनेता नहीं समझ रहे कि जनता उनके झूठ को झूठ समझ रही है। कल ही शिवसेना के विषय में विधानसभा अध्यक्ष ने निर्णय दिया। निर्णय सही है या गलत इस विषय पर मैं कोई चर्चा नहीं कर रहा लेकिन शिवसेना के अनेक मूर्खों ने जिन में उच्च पदाधिकारी भी शामिल हैं उन्होंने इस निर्णय को लोकतंत्र की हत्या बताया। मैं आज तक नहीं समझ सका कि लोकतंत्र की हत्या प्रतिदिन होती है और प्रतिदिन लोकतंत्र जिंदा हो जाता है। प्रतिदिन लोकतंत्र की हत्या भी यही मूर्ख नेता लोग करते हैं और लोकतंत्र मजबूत है यह बात भी यही मूर्ख लोग कहते हैं यह मूर्ख नेता रोज दो तरफ बातें करते हैं जबकि लोकतंत्र न कभी मरा है ना कभी जिंदा हुआ है। लोकतंत्र तो एक व्यवस्था है। आप गंभीरता पूर्वक विचार करिए कि यह बड़े-बड़े नेता इस प्रकार की झूठ बोलकर जनता को ठगना चाहते हैं। जनता भी इन मूर्खों की झूठ को अच्छी तरह समझ रही है लोकतंत्र कोई रावण नहीं है जो कितने भी बार मार

देने के बाद जिंदा होता चला जाए। लोकतंत्र एक व्यवस्था है जिसे सिर्फ तानाशाही ही मार सकती है, अन्य कोई नहीं। भारत में ना तानाशाही है ना होने की कोई संभावना है इसलिए लोकतंत्र की हत्या जैसे शब्दों का उपयोग करने से राजनेताओं को बचना चाहिए।

परम्परा और आधुनिकता के संघर्ष में अंधानुकरण उचित नहीं: Margdarshak.info

वर्तमान दुनिया में परंपरागत या आधुनिक इन दो विचारधाराओं के बीच बहुत संघर्ष चल रहा है भारत में भी यह संघर्ष बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। मैं मानता हूं कि परंपरागत में आई हुई बुराइयां दूर होनी चाहिए लेकिन आंख बंद करके परंपरागत का विरोध करके हम जो आधुनिकता को अपना रहे हैं वह कहीं वर्तमान बुराइयों की अपेक्षा अधिक घातक हो रही हैं। अभी-अभी वर्तमान में कर्नाटक की एक महिला ने जिनकी कमाई हर महीने करोड़ों रुपए थी जो अति आधुनिक जीवन जी रही थी उस महिला ने अपने चार वर्ष के बेटे की हत्या कर दी क्योंकि उसने अपने पति से तलाक ले लिया था और पति से तलाक लेने के बाद मामला न्यायालय में गया तो न्यायालय ने बच्चों का पूरा अधिकार मां को सौंप दिया और पिता को यह छूट दी कि वह प्रत्येक रविवार को जाकर अपने बेटे से मुलाकात कर सकता है। यह निर्णय उस मां को बहुत खराब लगा और रविवार के पहले ही मां ने अपने बेटे की हत्या कर दी। आप विचार करिए कि आधुनिकता हमें किस दिशा की ओर ले जा रही है तलाक बहुत आसान काम हो गया है आक्रोश और हत्याएं बढ़ रही हैं। एक मां मुकदमा लड़कर अपने बच्चे का अधिकार अपने पास लेती है और वही मां अपने बेटे की इसलिए हत्या कर देती है कि यह तलाकशुदा पिता से ना मिल सके। यह एक गंभीर प्रश्न है और आधुनिकता के समर्थकों को इस बात का उत्तर देना चाहिए कि परंपरागत और आधुनिकता के बीच इस टकराव का समाधान आधुनिकता नहीं है।

पर्यावरणवादी उत्पादकता बढ़ाने में बाधक: Margdarshak.info

वर्तमान में मैं छत्तीसगढ़ के सरगुजा क्षेत्र में हूँ। पिछले 5 वर्षों में इस क्षेत्र की कोयला खदानों को लगातार रोका जा रहा था। कांग्रेस के कार्यकर्ता पर्यावरणवादी के वेश में कोयला खदानों का काम बंद कर दे रहे थे और सरकार भी राहुल गांधी को प्रसन्न करने के लिए इन कोयला खदानों को डिस्टर्ब करती रहती थी। विदित हो कि यहां की कोयला खदान राजस्थान सरकार के माध्यम से अडानी संचालित करते हैं। अडानी विरोध के नाम पर इन खदानों को रोका

जा रहा था। नई सरकार ने शपथ ग्रहण की और उसके एक दिन बाद से ही इन कोयला खदानों को चालू कर दिया गया। जो 15-20 लोग कई वर्षों से इन कोयला खदानों को रोक रहे थे इन सबको पुलिस वालों ने पकड़ लिया और फिर अडानी की वह खदान का काम शुरू कर दिया गया। पर्यावरणवादी के नाम पर यह लोग कोयला खदान का काम रोक रहे थे। दुनिया जानती है कि भारत में कोयले का अभाव है और कोयला विदेश से मंगाना पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में भी यह लोग पर्यावरण के नाम पर नाटक कर रहे थे। लेकिन एक दिन में ही सारा पर्दाफाश हो गया और यह खदानों का काम फिर से चालू हो गया हैं। मेरा फिर से सुझाव है कि भारत विदेशों से आयात करें और अपना उत्पादन इस प्रकार के देशद्रोही लोगों के दबाव में बंद न होने दे। यह तो सरासर सरकार की नाकामी है। अडानी, अंबानी सहित देश के अनेक उद्योगपति भारत की आर्थिक प्रगति में जो सहयोग कर रहे हैं उसके लिए वह बधाई के पात्र हैं।

कांग्रेस सरकार में हिंदी का विरोध: Margdarshak.info

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार ने हिंदी के विरोध में अभियान छेड़ दिया था। स्कूलों में अंग्रेजी पढ़ने को प्रोत्साहित किया जा रहा था तो दूसरी ओर समाज में छत्तीसगढ़ी भाषा को आगे बढ़ाया जा रहा था। अंग्रेजी और छत्तीसगढ़ी दोनों का कोई मेल नहीं है लेकिन हिंदी के विरुद्ध एक षड्यंत्र किया जा रहा था। छत्तीसगढ़ की जनता ने इन षड्यंत्र कार्यों को नतीजा दिखा दिया। आज एक बड़े दक्षिण भारतीय नेता ने यह घमंड किया है कि हमारे तमिलनाडु में हिंदी भाषी लोगों से टॉयलेट साफ कराया जाता है। यह बात सच हो सकती है कि आपके तमिलनाडु में हिंदी भाषी की यह स्थिति हो और उनका कोई महत्व न हो। लेकिन अब धीरे-धीरे भारत की स्थिति बदल रही है जैसा आज हिंदी के साथ हो रहा है। भविष्य में 10 वर्षों के बाद अंग्रेजी की वही दुर्दशा होने वाली है। दया निधि मारन को भविष्य के बारे में भी सोचना चाहिए। अन्य विपक्षी दलों को भी हिंदी के बारे में अपनी बात साफ करनी चाहिए। मैं नीतीश कुमार को बधाई देता हूँ कि उन्होंने हिंदी के लिए मजबूत कदम उठाया और विपक्षी दलों की मीटिंग में हिंदी के पक्ष में मजबूत बात रखी। काश राहुल गांधी भी ऐसा सोच पाते।

महंगाई और बेरोजगारी का झूठा हल्ला: margdarshak.info

भारत में बेरोजगारी और गरीबी लगभग समाप्त हो गई है। वर्तमान समय में कोई भी ऐसा व्यक्ति बेरोजगार नहीं है जो शारीरिक श्रम करने के लिए तैयार हो। हमारे क्षेत्र में एक दिन के शारीरिक श्रम के बदले में कम से

कम 12 किलो अनाज मिल रहा है। इस तरह बेरोजगारी शून्य हो गई है क्योंकि 10 किलो अनाज में भी काम करने के लिए मजदूर उपलब्ध नहीं है। यहां तक कि देश के दूसरे भागों में मजदूरी 18 किलो अनाज है इसलिए हमारे क्षेत्र के बहुत मजदूर काम करने के लिए बाहर चले जाते हैं। बेरोजगारी के मामले में हम मुक्त हो गए हैं। गरीबी भी समाप्त हो गई है क्योंकि 12 किलो अनाज व्यक्ति को गरीबी से बाहर करने का एक अच्छा पैमाना है। यह बात अवश्य है कि अमीर लोग बहुत तेजी से आगे बढ़ रहे हैं और गरीब लोग चींटी की चाल से आगे जा रहे हैं। लेकिन जीवन स्तर सबका लगातार सुधर रहा है चाहे कोई गरीब है या अमीर है, बेरोजगार है या रोजगार प्राप्त, सबका जीवन स्तर आगे बढ़ रहा है। यदि बेरोजगारी का आकलन किया जाए तो या तो नेता लोग बहुत बेरोजगार हो गए हैं अथवा कुछ शिक्षित लोग बेरोजगार हो गए हैं जो श्रम नहीं करना चाहते। जो केवल सरकारी नौकरी के लिए जान दे रहे हैं। लेकिन इस प्रकार के नकली बेरोजगारों को बेरोजगार नहीं कहा जा सकता यह नकली बेरोजगार असली बेरोजगारों को बदनाम कर रहे हैं। क्योंकि उन्हें पकौड़ी तलने में शर्म आती है, उन्हें मजदूरी करने में शर्म आती है और वह तो सिर्फ क्लर्की करना जानते हैं। ऐसे जो शैक्षिक बेरोजगार हैं उन्हें हम रोजगार प्राप्त मान रहे हैं क्योंकि वह किसी अच्छे रोजगार की प्रतीक्षा में है बेरोजगार नहीं है। महंगाई और बेरोजगारी का किसी भी प्रकार का हल्ला झूठ है राजनेताओं की आपसी लड़ाई है, सच्चाई बिल्कुल नहीं है।

मेरे एक मित्र हैं धीरज जैन। उन्होंने लिखा है कि सरकार की जिम्मेदारी है कि वह सब लोगों को योग्यता अनुसार काम भी दे और काम के अनुसार वेतन भी दे। मैं नहीं समझा कि उनका यह विचार कितना सही है। आप विचार करिए कि यदि भारत के 100 करोड़ लोग पढ़ लिख लें तो क्या 100 करोड़ लोगों को हम किसी भी प्रकार का योग्यता अनुसार वेतन दे सकते हैं और यदि सबको उसे अनुसार वेतन दिया जाएगा तो श्रम कोई क्यों करेगा। इसलिए मेरा यह सुझाव है कि सरकार की जिम्मेदारी सिर्फ कमजोरों को मदद करने की है। यदि कोई भूखा है तो उसे योग्यता अनुसार काम और अल्प समय के लिए जीवन भत्ता दिया जा सकता है। लेकिन किसी को योग्यता अनुसार वेतन नहीं दिया जा सकता वह तो आपको स्वतंत्रता से ही प्राप्त करना होगा। इसलिए मेरा यह सुझाव है कि इस बेरोजगारी की परिभाषा को बदल दिया जाए। किसी भी बेरोजगार को नौकरी देना सरकार की तब तक जिम्मेदारी है जब तक वह भूखा है या कमजोर है। जो भूखा नहीं है, मजबूत है और जो अच्छे रोजगार की प्रतीक्षा कर रहा है उसे रोजगार देना सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। मैं बेरोजगारी की वर्तमान परिभाषा को गलत मानता हूँ। यह कैसे न्याय संगत हो सकता है

कि एक श्रमिक को ढाई सौ रुपए में भी काम न मिले और एक डॉक्टर हजार रुपए में काम करने को तैयार न हो। सरकार डॉक्टर की चिंता करें और उस मजदूर की चिंता न करें। यह तो सरासर अन्याय है। मैं फिर से आपसे निवेदन करता हूँ कि बेरोजगारी की जो दुनिया में परिभाषा बनी हुई है वह पूरी तरह गलत है और उसे बदलने की जरूरत है।

वर्तमान समय में सबकी शिक्षा एक समान है: Margdarshak.info

मेरे एक मित्र विनोद शाह जी ने लिखा है कि सब की शिक्षा एक समान होनी चाहिए। मेरे विचार से सब की शिक्षा तो एक समान है ही उसमें कहां कोई भेदभाव है। सब लोग अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार कहीं भी पढ़ने के लिए स्वतंत्र है। कहीं कोई भेदभाव नहीं है। जिस तरह सबको गरीबी रेखा के नीचे जीने वालों को एक समान भोजन, एक समान वस्त्र की गारंटी है इसी तरह उन्हें समान शिक्षा की गारंटी है। उसके ऊपर के जो लोग हैं वे लोग भोजन भी स्वतंत्रता से कर सकते हैं, कपड़े भी स्वतंत्रता से पहन सकते हैं, आवागमन में भी वह स्वतंत्र हैं, शिक्षा में भी स्वतंत्र हैं, स्वास्थ्य में भी स्वतंत्र हैं दुनिया के हर किसी मामले में ऊपर के लोग सब स्वतंत्र हैं और नीचे के लोगों को सबको समान सुविधा है। इसलिए यह एक फैशन चल पड़ा है कि सारे निकम्मे लोग कहते हैं शिक्षा समान होनी चाहिए। यह नारा पूरी तरह से गलत है। इसका कोई अर्थ नहीं है क्योंकि शिक्षा तो सब की अपने आप समान है ही। मैं अभी तक नहीं समझा कि ऊपर के लोगों का भोजन समान है, जीवन स्तर असमान है तो ऊपर के लोगों की शिक्षा समान हो यह कैसी गलत बात प्रचारित हो रही है। इसलिए जो लोग शिक्षा समान का नारा लगाते हैं यह गलत है क्योंकि शिक्षा तो समान है ही।

ईश्वर यथार्थ नहीं है लेकिन हमारी एक आवश्यकता है: Margdarshak.info

मेरे एक मित्र महेंद्र नेह जी हैं जो गंभीर हैं और विचारों से कम्युनिस्ट है। उन्होंने लिखा है कि हमारे शास्त्रों ने समाज को बहुत गुमराह किया है। यह बात आंशिक रूप से सत्य है लेकिन इसका समाधान खोजना पड़ेगा। साम्यवादियों द्वारा बताया गया समाधान पूरी तरह गलत है। वह तो समाज को और अधिक गुमराह करने वाला है क्योंकि साम्यवादी विकल्प तो देते नहीं। वह सत्ता के केंद्रीकरण के लिए समाज, धर्म, परिवार सबको कमजोर करना चाहते हैं। मैं इससे सहमत नहीं हूँ। मैं भी यह बात तो समझता हूँ कि ईश्वर यथार्थ नहीं है लेकिन हमारी एक आवश्यकता है। ईश्वर को समाज से बाहर करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है लेकिन साम्यवाद ईश्वर को तो बाहर कर रहा है लेकिन उसका

विकल्प नहीं दे पा रहा। मार्क्स ने इस संबंध में सोचा था कि स्टेट अर्थात राज्य ईश्वर के रूप में स्थापित हो सकेगा किंतु वह नहीं हुआ और स्टेट स्वयं में ईश्वर बनने लगा, जो उचित नहीं था। राज्य को एक दृश्य शक्ति के रूप में नहीं बल्कि एक अदृश्य भय तक ही सीमित रहना चाहिए था। इसलिए मेरा यह निवेदन है कि शास्त्रों को गलत कहने की अपेक्षा उसके स्थान पर कोई विकल्प देना ज्यादा अच्छा रहेगा।

आर्य समाज वैचारिकी पर कार्य करे - बजरंग मुनि: Margdarshak.info

कुछ दिन पहले छत्तीसगढ़ आर्य महासम्मेलन में मुझे मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था और वहां मुझे सम्मानित किया गया। मेरे सम्मान में वहां कई बातें कही गई बताया गया कि मैं एक समाज विज्ञानी हूँ। मैं क्या हूँ यह मैं तो नहीं बता सकता क्योंकि मेरा आकलन तो समाज ही करेगा, अभी भी कर रहा है और भविष्य में भी करेगा। लेकिन मैं इतना अवश्य कह सकता हूँ कि मैं अपने पूरे जीवन में जो कुछ भी किया वह पूरी ईमानदारी से किया और पूरे प्रयत्न से किया। कार्यक्रम में मुझे भी बोलने का अवसर दिया गया। मैंने उन्हें बताया कि मैं अपने को एक समाज विज्ञानी के रूप में तो सफल मानता हूँ लेकिन समाज सुधारक के रूप में असफल मानता हूँ क्योंकि मेरी बातों का समाज पर कोई व्यापक प्रभाव अभी तक दिखाई नहीं दिया। यह बातें विचारणीय जरूर हैं क्योंकि मैं यह सोच रहा था कि वर्तमान दुनिया में जो असत्य धारणाएं सत्य के समान स्थापित हो गई हैं, उन धारणाओं को हम भारत से चुनौती दें। लेकिन मैं उन धारणाओं को चुनौती देने में अभी तक अपने को सफल नहीं मानता हूँ। फिर भी मैं यह मानता हूँ इन धारणाओं को चुनौती देने की शुरुआत हो गई है और भविष्य में हमारे मित्र इस धारणा को आगे बढ़ाएंगे। यह एक बहुत बड़ी आवश्यकता है कि असत्य धारणाएं समाज में लगातार बढ़ती रहे, वे सत्य के समान स्थापित हो जाए और हम विचारक लोग उन्हें चुनौती न दे सके। मैं इस बात से संतुष्ट हूँ कि भारत इन असत्य धारणाओं को चुनौती देने की शुरुआत कर रहा है। असत्य को सत्य के समान स्थापित हो जाना यह हम विचारकों के लिए एक कलंक है और हमें प्राथमिकता के आधार पर इस चुनौती को स्वीकार करना चाहिए।

हिंदी का विरोध करना और अंग्रेजी का बढ़ावा देना घातक: margdarshak.info

कांग्रेस पार्टी ने घोषणा की है कि पूरे देश में धीरे-धीरे अंग्रेजी को बढ़ावा दिया जाएगा। दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी ने घोषणा की है कि पूरे देश में

धीरे-धीरे अंग्रेजी का प्रयोग कम करके हिंदी को बढ़ाया जाएगा। कांग्रेस पार्टी ने अपने राज्यों में इस योजना पर कार्य प्रारंभ भी कर दिया है। मैं नहीं समझता कि कांग्रेस पार्टी की यह नीति किस तरह उचित कहीं जा सकती है। मैं तो पूरी तरह हिंदी का पक्षधर हूं और मैं इस बात से आश्चर्यचकित हूं कि आज भारत में कोई राजनीतिक दल इस तरह खुलकर हिंदी के विरुद्ध अंग्रेजी का समर्थन भी कर सकता है। राम मनोहर लोहिया ने तो इसके लिए एक आंदोलन भी चलाया था लेकिन दुर्भाग्य से राम मनोहर लोहिया के वंशज ही कांग्रेस के अंग्रेजी बढ़ाओ आंदोलन में इंडिया के साथ हो गए हैं। मैं फिर से कांग्रेस पार्टी से निवेदन करता हूं कि वह अपनी नीतियों पर दोबारा विचार करें। हिंदी को नुकसान पहुंचा कर अंग्रेजी को बढ़ावा देने की योजना घातक है।

तुष्टिकरण, ब्लैकमेलिंग का एक माध्यम है: Margdarshak.info

तुष्टिकरण की नीति समाज में बहुत घातक प्रभाव डालती है। भारत अबतक अल्पसंख्यक तुष्टीकरण से तो प्रभावित था ही अब तो हर संगठित समूह तुष्टिकरण के लिए दबाव डाल रहा है। आदिवासी, दलित, महिला, सरकारी कर्मचारी, अंग्रेजी, भाषा आदि के आधार पर पता नहीं कुकुरमुत्ते की तरह कितने संगठन बन गए हैं जो सरकार पर तुष्टिकरण के लिए दबाव डालते हैं और सरकार भी वोटो की लालच में उनके तुष्टीकरण में फंस जाती है। हमें इस प्रकार के सारे तुष्टीकरण को समाप्त कर देना चाहिए। यह संगठित दबाव ब्लैकमेलिंग के माध्यम है जिसमें असंगठित लोगों का शोषण होता है। मैं सरकार से निवेदन करता हूं कि सब प्रकार के तुष्टीकरण को समाप्त कर दें क्योंकि तुष्टीकरण समाज में बहुत गलत संदेश दे रहा है।

दिशा और दशाहीन कांग्रेस पार्टी: margdarshak.info

कांग्रेस पार्टी को मैं 70 वर्षों से देख रहा हूं। एक परिवार इसका संचालक है और बाकी सब गुलाम लोग जो किसी न किसी स्वार्थ के कारण जुड़े हैं अन्यथा यह कोई राजनीतिक दल नहीं हैं। अभी इस दल के गुलामों ने एक कन्फ्यूजन पैदा कर दिया। संसद में 5-6 लोगों ने जो उत्पात मचाया उस उत्पात के विरोध में कांग्रेस पार्टी के लोगों ने बहुत बड़ा हंगामा किया। इस मामले को बहुत बड़ा मामला सिद्ध करने का प्रयास किया। कांग्रेस के एक बड़े नेता आचार्य जी ने तो इस मामले को नक्सलवादी घटना तक बताने की कोशिश की। दूसरी ओर राहुल गांधी ने एकाएक इस मामले को साधारण घटना बताया और कहा कि देश में बढ़ रही बेरोजगारी के कारण युवक पथभ्रष्ट होकर इस प्रकार की घटनाएं कर रहे हैं। अब कांग्रेस पार्टी उलझन में है कि वह राहुल गांधी की बात

का पक्ष ले अथवा संसद में जो आवाज उठी, उसका पक्ष ले। इस घटना को साधारण घटना सिद्ध करें या बड़ी घटना सिद्ध करें। इस उलझन में गुलाम लोग पड़े हुए हैं। कभी कुछ बोलते हैं तो कभी कुछ बोलते हैं। मेरे विचार में इस मामले की जांच होते तक चुप रहना चाहिए। यदि इस मामले में कोई षड्यंत्र है तो उजागर होते तक हम प्रतीक्षा करें, और यदि कोई षड्यंत्र नहीं है तो यह सिर्फ मूर्खों का काम है और इन मूर्खों को दंड देकर के इस मामले को खत्म कर देना चाहिए।

सरकार का काम "परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम":
margdarshak.info

कल मैं कर्नाटक के गुलबर्गा में राजीव दीक्षित जी की स्मृति में आयोजित एक कार्यक्रम में शामिल हुआ। मैं इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में था और मुख्य वक्ता था। कार्यक्रम बहुत अच्छी तरह से चला। स्वदेशी और लोक स्वराज पर व्यापक चर्चा हुई । कार्यक्रम में इस बात पर भी गंभीर चर्चा हुई कि वर्तमान समय में दुनिया के सभी अच्छे लोगों को दुष्ट प्रवृत्तियों के खिलाफ एक जुट होकर मुहिम चलानी चाहिए। सरकार का यह काम था कि वह शराफत की सुरक्षा करती और दुष्ट प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करती लेकिन दुनिया की सरकारें इसमें असफल रही हैं और इसलिए अब समाज को ही इस बात की पहल करनी चाहिए कि परित्राणाय साधु नाम विनाशाय च दुष्कृताम का कार्य समाज कैसे करें। चर्चा दिनभर चलती रही, शाम तक वासवराज पाटिल जी भी इस चर्चा में शामिल रहे। पाटिल जी राज्यसभा के सदस्य थे और काफी गंभीर माने जाते हैं । शिवानंद भाई ने कार्यक्रम का संचालन किया और शाम को 5:00 बजे यह कार्यक्रम समाप्त हुआ।

कर्नाटक के गुलबर्गा में एक पुराने मित्र बड़े अच्छे राजनेता से मुलाकात हुई। उन्होंने अपनी यह चिंता व्यक्त की कि देश केंद्रित सत्ता की तरफ बढ़ रहा है यह सबसे बड़ा खतरा है। मैंने उन्हें यह बताने का प्रयास किया कि देश में जो अव्यवस्था थी उस अव्यवस्था के समाधान के लिए केंद्रित सत्ता मजबूत हो रही है। लोकतंत्र जब अव्यवस्था की दिशा में बढ़ता है तब आम जनता तानाशाही के विकल्प को चुन लेती है जो अच्छा विकल्प नहीं है लेकिन मजबूरी है। वर्तमान भारत की जनता अव्यवस्था को स्वीकार नहीं कर सकती इसलिए नरेंद्र मोदी को विकल्प के रूप में माना जा रहा है। हमारे मित्र को इस बात पर आपत्ति थी कि लोकतंत्र की जगह सत्ता का केंद्रीयकरण अच्छा नहीं है। मैंने उन्हें समझाने का प्रयास किया कि अच्छा विकल्प नहीं है यह मजबूरी है जो आएगी ही। यदि लोकतंत्र लोक स्वराज की दिशा में नहीं जाएगा तो तानाशाही का खतरा

बना ही रहेगा इसलिए यदि नरेंद्र मोदी को कोई हटाना चाहता है तो वह वैचारिक धरातल पर विकल्प दे व्यक्तिगत स्तर पर विकल्प नहीं चाहिए और वैचारिक धरातल पर विकल्प तो लोक स्वराज ही है, जो गांधी ने दिया जयप्रकाश ने दिया और अन्ना ने दिया। विकल्प हमें अटल बिहारी मुरारजी देसाई अरविंद केजरीवाल पंडित नेहरु जैसा नहीं चाहिए। हमें एक वैकल्पिक प्रणाली चाहिए जो लोक स्वराज ही आ सकती है। यदि हम भारत में व्यवस्था के, विकल्प के रूप में नरेंद्र मोदी की जगह पर राहुल गांधी, नीतीश कुमार, अरविंद केजरीवाल, ममता बनर्जी या अन्य किसी को देखते हैं तो हम बिल्कुल गलत कर रहे हैं क्योंकि यह सब घिसे पिटे चेहरे हैं जिनके पास कोई विकल्प नहीं है। इन लोगों को मिलकर सत्ता का विकल्प नहीं विचारों का विकल्प देना चाहिए। मेरे मित्र मेरी बात से सहमत हुए।

राहुल गांधी नाटक बाजी बंद करें नरेंद्र मोदी की नीतियों का विरोध करें: margdarshak.info

मैं पहले भी कई बार लिख चुका हूं कि राहुल गांधी राजनीति में जुआ खेलते हैं राहुल गांधी झूठ का दम लगाते हैं और दांव उल्टा पड़ता है। कल भी अडानी के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी को बड़ा झटका दिया है। कल टीवी पर जिस तरह गौतम अडानी शेर के समान चल रहे थे और राहुल गांधी गायब थे, उस दृश्य को देखकर ही ऐसा लगता है कि राहुल लगातार गलतियां कर रहे हैं। भारत के उद्योगपतियों को इस तरह बदनाम करने का कुचक्र राहुल के लिए नुकसानदायक होगा। राहुल ने संसद नहीं चलने दी लंबे समय तक संसद को रोक कर रखा लेकिन नतीजा क्या निकला। सुप्रीम कोर्ट ने भी राहुल की बात मानने से इनकार कर दिया। मैं फिर सलाह देता हूं कि राहुल गांधी नाटक बाजी बंद करें, यथार्थ पर आवे। नरेंद्र मोदी की नीतियों का विरोध करें, नरेंद्र मोदी का विरोध करना उनके लिए उचित नहीं है। अब भी यदि राहुल गांधी कुछ अकल से काम करना चाहते हैं तो जयप्रकाश और अन्ना हजारे के अधूरे काम लोकस्वराज आंदोलन की शुरुआत करें। इस नए सिरे से अगर राहुल शुरू करेंगे तो मोदी के सामने वैचारिक धरातल पर राहुल मजबूत हो सकते हैं अन्यथा राहुल स्वयं भी डूबेंगे और कांग्रेस को भी डूबाएंगे।

भीड़ समर्थित हिंसा का क़ानूनी संरक्षण भी सड़क दुर्घटना बढ़ाने का कारण: margdarshak.info

कांग्रेस एक सांप्रदायिक दल है और इस्लाम एक हिंसक संगठन है। कांग्रेस ने मौब लिंचिंग को छोटा अपराध बनाया और मुसलमान ने इस कानून

का दुरुपयोग किया। 70 वर्षों से पूरा देश देख रहा है कि किसी भी हिंसा में पहल मुसलमान की ओर से ही होती है क्योंकि वह पहले आक्रमण को सफलता का हथियार मानता है और कानून के अनुसार भी भीड़ के द्वारा किया गया उपद्रव बड़ा अपराध नहीं है। सन 1984 के दंगों में भी कांग्रेस पार्टी ने इसी गलत कानून का दुरुपयोग किया था। इस गलत कानून के कारण ही समाज में हिंसा बढ़ी है और यदि कोई छोटा-मोटा भी एक्सीडेंट हो जाए तो भीड़ या तो आग लगती है या हिंसा करती है। इसी भय के कारण लोग भीड़ से बचते हैं। अब भारत सरकार ने नया कानून बनाया है जिससे भीड़ हिंसा करने से डरेगी और गलती से एक्सीडेंट करने वालों को भगाने की मजबूरी नहीं रहेगी। फिर भी यदि कोई जानबूझकर गलती के दंड से बचने की कोशिश करेगा तब उसे कठोर दंड दिया जाएगा। इस कानून से कांग्रेसियों और मुसलमान को बहुत कष्ट हो रहा है। दोनों इकट्ठे होकर इस कानून का विरोध कर रहे हैं लेकिन समाज में हिंसा को रोकने के लिए यह कानून बहुत उपयोगी है।

भारत सरकार ने अभी-अभी तीन पुराने कानून को नया स्वरूप दिया है। अब तक आमतौर पर ऐसा होता रहा है कि भीड़ यदि किसी व्यक्ति की मार-मार कर हत्या कर दे तो उसे बहुत गंभीर अपराध नहीं माना जाता था ऐसा माना जाता था कि भावना में भाकर यह हत्या की गई है, इसे मौब लिंचिंग कहा जाता था। इसका परिणाम होता था कि यदि कोई व्यक्ति गलती से भी कोई एक्सीडेंट कर दे, कोई मर जाए या चोट लग जाए और वह ना भागे तो भीड़ ऐसे व्यक्ति को मारति पीटती थी गाड़ी में आग लगती थी हत्या कर देती थी। फलस्वरूप बेचारा गाड़ी वाला डरकर भाग जाता था। अब सरकार ने यह कानून बनाया है कि भीड़ यदि किसी व्यक्ति की हत्या करेगी तो उस भीड़ में शामिल लोगों को फांसी की सजा भी दी जा सकती है। अब इस प्रकार गलती करके भागने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। इसके साथ ही सरकार में यह भी कानून बनाया है कि यदि कोई गाड़ी वाला ड्राइवर किसी प्रकार का एक्सीडेंट करके और अपने को बचाने के लिए भाग जाएगा उस एक्सीडेंट व्यक्ति की मदद नहीं करेगा तो उसे भी कठोर कारावास का दंड दिया जाएगा साधारण कारावास नहीं। मेरे विचार से यह दोनों ही कानून बहुत अच्छे बने हैं यद्यपि इस कानून का भीड़ में शामिल लोग भी और गाड़ी के ड्राइवर भी विरोध कर रहे हैं लेकिन मैं ऐसा मानता हूं कि विरोध करने वालों का राजनीतिक उद्देश्य है या आपराधिक उद्देश्य है। वास्तव में यह कानून प्रशंसा योग्य है। अब ना गलती करने वालों पर भीड़ आक्रमण करेगी और ना ही गलती करने वाले को भागने की छूट रहेगी।

<u>ज़ूम चर्चा कार्यक्रम:</u> ***<u>MARGDARSHAK.INFO</u>***

ध्रुवीकरण प्रवृत्तियों के आधार पर होना चाहिए:

कुछ दिन पहले 'जूम एप' पर चर्चा हुई कि ध्रुवीकरण प्रवृत्तियों के आधार पर होना चाहिए जन्म के आधार पर नहीं। कोई व्यक्ति यदि दुष्ट प्रवृत्ति का होगा तो वह चाहे किसी भी जाति का हो, किसी भी वर्ण का हो उसे अपराधी माना जाना चाहिए। जो व्यक्ति अच्छी प्रवृत्ति का होगा उसे हमेशा प्रशंसा भी मिलनी चाहिए, मदद भी मिलनी चाहिए। पुराने जमाने में अच्छे और बुरे के बीच ही संघर्ष चलता था जिसे देवासुर संग्राम कहा जाता था। लेकिन वर्तमान समय में प्रवृत्ति के आधार पर ध्रुवीकरण न होकर जाति या धर्म के आधार पर हो रहा है। हिंदू और मुसलमान, आदिवासी और गैर आदिवासी, महिला और पुरुष के नाम पर जो संगठन बना रहे हैं यह संगठन अपराधियों को अपने साथ जोड़ लेते हैं जो अपराध वृद्धि में सहायक हैं। चर्चा में यह बात साफ हुई कि किसी भी प्रकार के संगठन यदि बना रहे हैं तो वह अपराध में सहायक हो रहे हैं क्योंकि संगठन प्रवृत्ति के आधार पर नहीं बन रहे हैं। इसलिए अब हमें इस बात को अधिक महत्वपूर्ण मानना चाहिए कि संगठन प्रवृत्ति के आधार पर बने। अच्छे और बुरे के बीच बंटवारा, जाति, धर्म, महिला, पुरुष, आदिवासी, गैर आदिवासी इस प्रकार के भेद समाप्त कर दिए जाएं। दुख की बात यह है कि हमारे वर्तमान राजनेता दिन-रात झूठ बोल रहे हैं, भ्रष्टाचार कर रहे हैं और जाति की दुहाई दे रहे हैं। कोई अपने को पिछड़ी जाति का कहता है तो कोई अपने को दलित वर्ग का घोषित करता है तो कोई अपने को महिला होने के नाम पर योग्यता बता रहा है। लेकिन सच बात यह है कि यह सब दलित, महिला, आदिवासी पिछड़ा यह सब वास्तव में भ्रष्टाचार को ढकने का माध्यम मात्र है और कुछ नहीं।

वर्तमान भारतीय संस्कृति में बौद्ध, इस्लाम, ईसाईयत और साम्यवाद की खिचड़ी:

कुछ दिन पहले 'जूम एप' पर रामानुजगंज कार्यालय से चर्चा हुई कि हिंदू संस्कृति और भारतीय संस्कृति में क्या फर्क है। बताया गया कि हिंदू संस्कृति सर्वधर्म समभाव, वसुधैव कुटुंबकम जैसे महत्वपूर्ण विचारों के आधार पर कार्य करती है और वर्तमान भारतीय संस्कृति में दो बातें महत्वपूर्ण हो गई है पहली कमजोर को दबाओ और मजबूत से दबो। दूसरी मेहनत बहुत कम करो और अधिक से अधिक परिणाम के प्रयत्न करो। यह दो दुर्गुण वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति में प्रवेश कर गए हैं जो हिंदू संस्कृति में नहीं थे। बुद्ध धर्म के पहले जो हमारी संस्कृति थी वह हिंदू संस्कृति थी। बुद्ध इस्लाम, ईसाईयत और साम्यवाद को मिलाकर जो खिचड़ी संस्कृति बनी वह संस्कृति आज हम देख रहे हैं और इसे हम भारतीय संस्कृति कह सकते हैं हिंदू संस्कृति

नहीं। यद्यपि इस भारतीय संस्कृति में हिंदू संस्कृति भी मिली हुई है। एक मित्र ने यह प्रश्न भी उठाया कि बुद्ध के पहले ही हमारे हिंदू संस्कृति में जातिवाद, छुआछूत जैसी बुराइयां घर कर गई थी। वर्ण और जाति व्यवस्था योग्यता और कर्म के आधार पर न होकर जन्म के आधार पर हो गई थी। इन बुराइयों का बहुत दुष्परिणाम हुआ। इस बात पर सब लोगों ने सहमति व्यक्त की कि हिंदू संस्कृति में अनेक अच्छाइयां होते हुए भी कुछ बुराइयां प्रवेश कर गई थी और उन बुराइयों का भी प्रभाव हिंदू संस्कृति पर पड़ रहा था। लेकिन जो बाद में संस्कृति बनी वह तो पूरी की पूरी ही गड़बड़ हो गई। वर्तमान भारतीय संस्कृति में अच्छाइयां बहुत कम है और बुराइयां अधिक हैं।

समझदारी से आती है सही निर्णय की बुद्धि:

कुछ दिन पहले 'जूम एप' पर रामानुजगंज कार्यालय से चर्चा हुयी कि यदि कहीं आग लग गई है तो हमें पहले आग बुझाना चाहिए या अपना घर बचाना चाहिए। इसका निर्णय ऑन द स्पॉट जो व्यक्ति रहता है वही कर सकता है क्योंकि यदि आग भयंकर लगी हुई है तो घर बचाना चाहिए अगर आग बहुत कम है तो आग को बुझाना चाहिए यह निर्णय वहां रहने वाला व्यक्ति ही कर सकता है। वर्तमान समय में आम लोगों की समझदारी घट जाने के कारण इस प्रकार के निर्णय होने में गलतियां हो जा रही हैं। चालाक लोग सिर्फ अपना घर बचाना चाहते हैं और शरीफ लोग, भावना प्रधान लोग सिर्फ आग बुझाने को प्राथमिकता देते हैं। जबकि दोनों ही मार्ग स्थिति अनुसार गलत है। यदि हम वर्तमान समय का आकलन करें तो वर्तमान समय में समाज में भी अनेक प्रकार की कुरीतियां बढ़ रही हैं। दूसरी ओर राज्य समाज को गुलाम बनाता जा रहा है। ऐसी स्थिति में हमें सामाजिक बुराइयां दूर करनी चाहिए या राज्य की ताकत से मुक्ति का कोई मार्ग खोजने चाहिए, यह महत्वपूर्ण विषय है। चर्चा में यह बात सामने आई कि जो लोग अपने को शरीफ समझते हैं, कमजोर मानते हैं वह सामाजिक बुराइयां दूर करने में लगा सकते हैं। लेकिन जो लोग समझदार हैं जो लोग थोड़ा सा मजबूत है सक्षम है उन्हें राज्य की शक्ति को कम करने का प्रयास करना चाहिए यही हमारी समझदारी होगी। राज्य हमेशा चाहता है कि हम सामाजिक बुराइयों को दूर करने की कोशिश करें लेकिन हमें राज्य की इस सलाह से बचना चाहिए। सामाजिक बुराइयां तो हम लोग बाद में भी दूर कर लेंगे लेकिन राज्य की गुलामी अधिक खतरनाक है।

परिवार व्यवस्था जैसे आन्तरिक मामलों में राज्य का अनुचित हस्तक्षेप।

कुछ दिन पहले 'जूम एप' पर रामानुजगंज कार्यालय से चर्चा हुयी कि महिला और पुरुष के बीच व्यक्तिगत संबंधों को अनुशासित करने के लिए विवाह प्रणाली बनी थी। विवाह प्रणाली को परिवार व्यवस्था और समाज व्यवस्था के द्वारा अनुशासित किया जाता था। जब तक बलात्कार न हो तब तक राज्य किसी प्रकार का कोई दखल नहीं देता था। लेकिन अब इस आंतरिक मामले में राज्य ने हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। विवाह के मामले में भी राज्य दखल देने लगा। परिवार व्यवस्था को कमजोर कर दिया गया। समाज व्यवस्था का सारा काम राज्य ने अपने ऊपर संभाल लिया। राज्य का दायित्व था कि बलात्कार और हत्याएं रोकना लेकिन राज्य तो विवाह प्रणाली में हस्तक्षेप करने लग गया, परिवार की आंतरिक व्यवस्था में दखल देने लगा और इसका यह परिणाम हुआ कि आज समाज में बलात्कार और हत्याएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। महिला और पुरुष के बीच में लगातार कटुता बढ़ रही है। जो काम समाज और परिवार को करना चाहिए था उस कार्य से परिवार और समाज को बाहर करके राज्य का हस्तक्षेप बढ़ते जाना इस समस्या का मुख्य कारण है। आप बलात्कारों को सिर्फ फांसी देकर नहीं रोक सकते बलात्कारों को रोकने के लिए आपको सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्था पर भी चिंतन करना पड़ेगा। लेकिन राज्य परिवार और व्यवस्था को पूरी तरह समाप्त कर रहे हैं। इसलिए मेरा यह सुझाव है कि बलात्कारों को रोकने के लिए परिवार व्यवस्था और समाज व्यवस्था को भी शामिल करने की जरूरत है। राज्य व्यवस्था इस समस्या का समाधान नहीं कर सकेगी बल्कि यह समस्या और बढ़ती चली जाएगी।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुधारने में युवाओं के पहल की जरूरत।

कुछ दिन पहले 'जूम एप' पर रामानुजगंज कार्यालय से ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर चर्चा हुयी। जिसमे देश के अलग-अलग हिस्सों में रहने वाले विद्वानों ने भाग लिया। नगरों को तमाम ऐसी सुविधाएं जो शासन उपलब्ध कराता है इसके अलावा एक घनी आबादी होने के अलग राजनैतिक एवं आर्थिक लाभ होते हैं। राज्य के द्वारा इनका पोषण ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बिगाड़ कर करना उचित नहीं। नगरों में सस्ता पानी सस्ती बिजली आदि उपलब्ध कराने के शासकीय प्रयासों ने ग्रामीण क्षेत्रों के विकसित होने के अवसर ही समाप्त कर दिए। एक तो पहले ही बढ़ती जनसंख्या प्राकृतिक पारिस्थितिकी ने पहले ही कृषि पर निर्भर ग्राम्य जीवन को दुरूह बना रखा है। दूसरे नगरों के प्रदूषण को बचाने और उन्हें ठीक जलवायु उपलब्ध कराने की दुरूह जिम्मेदारी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था ने थोप रखी है यह उचित नहीं। खेती लाभप्रद व्यवसाय

बने इसके लिए युवाओं को कृषि से जोड़ने के उपायों पर भी चिंतन करना चाहिए, यह भी विद्वानों का मत था।

समाज के कार्यों में राजकीय हस्तक्षेप सबसे बड़ी समस्या:

कल रात 8 बजे रामानुजगंज कार्यालय से जूम पर इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा हुई कि राज्य और समाज के दायित्व किस प्रकार बंटे हुए हैं। व्यवस्था दो प्रकार की होती है सामाजिक और शासकीय। शासन का काम होता है सुरक्षा और न्याय, समाज का काम होता है अहिंसा और सत्य की सुरक्षा। शासन के लिए अहिंसा और सत्य मार्ग होता है लक्ष्य नहीं। लक्ष्य तो सिर्फ सुरक्षा और न्याय होता है। स्पष्ट है कि राज्य को सुरक्षा और न्याय के लिए हिंसा और असत्य का सहारा लेने की छूट है। दूसरी ओर समाज के लिए यह आवश्यक है कि वह अपराधियों का हृदय परिवर्तन करें। समाज अपराधियों की दंड नहीं दे सकता और राज्य अपराधियों का हृदय परिवर्तन नहीं कर सकता। दोनों के तरीके अलग-अलग हैं। वर्तमान समय में राज्य हृदय परिवर्तन के प्रयत्न कर रहा है और समाज अपराधियों को सीधा दंड देने की कोशिश कर रहा है यह पूरी तरह गलत है। इस गलती में सबसे अधिक दोषी राज्य है जिसने समाज के सारे कार्य अपने पास समेट लिए। इसलिए राज्य को इस संबंध में पहल करनी चाहिए अन्यथा समाज में और अधिक हिंसा बढ़ सकती है। चर्चा करीब 1 घंटे चली। जिसमें देश के चुने हुए 12 विद्वानों ने भाग लिया।

आयोजन:

आर्य समाज में समूचे विश्व को हिन्दुत्व की दिशा धारा में ले चलने का सामर्थ्य: सुप्रसिद्ध समाज विज्ञानी श्रद्धेय बजरंग मुनि

MARGDARSHAK WEB LINK

अंबिकापुर में प्रांतीय आर्य सभा क्षत्तिसगढ़ के तत्वावधान में आयोजित 201 कुंडीय विश्व शांति यज्ञ का सफल आयोजन नगर के संत हरकेवल दास शिक्षण महाविद्यालय के परिसर में किया गया। इस आयोजन में रामानुजगंज निवासी सरगुजा के गौरव सुप्रसिद्ध मौलिक विचारक समाज विज्ञानी श्रद्धेय बजरंग मुनि जी को नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया। यज्ञ की ब्रह्मा विश्वप्रसिद्ध पाणिनि कन्या गुरुकुल वाराणसी की प्राचार्या विदुषी बहन नंदिता शास्त्री जी ने अपने कर कमलों द्वारा वह सम्मान श्रद्धेय जी को दिया। कार्यक्रम में जसपुर राजघराने के प्रबल प्रताप सिंह जी की अगुवाई में, वे ग्रामीण वा आदिवासी जो हमारी अदूरदर्शिता और संवादहीनता के कारण पंथच्युत हो चंगाई सभा द्वारा ईसाई बना दिए गए थे उनका प्रायश्चित स्वरूप चरण पखार

कर घर वापसी कराई गई। दिलीप सिंह जूदेव 'कुमार साहब' के पुत्र प्रबल प्रताप सिंह जी एवं पौत्र ना केवल परम्परा निर्वहन के लिए बल्कि सचेस्ट घर वापसी पर काम करते रहे हैं।

ऐसे महान ऐतिहासिक अवसर पर श्रद्धेय मुनि जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द की विरासत ने उन्हें सामाजिक छुआछूत ना मानने के कारण हिन्दू धर्म से निष्कासित किए जाने पर उनकी सहायता की और उन्हें सगर्व इस महान सनातन संस्कृति की 'वैचारिक संतुलनवादी हिन्दुत्व' की दिशा धारा से परिचित कराया। उन्होंने कहा मोदी के रहते हिन्दुत्व को कोई खतरा नहीं। आज सम्पूर्ण विश्व हिंसा आक्रोश और स्वार्थपरता की गम्भीर वैयक्तिक दोषों और व्यवस्था के केन्द्रीयकरण से बिगड़े शक्ति संतुलन का समाधान ढूंढ़ रहा है उसका एक मात्र उपाय भारत की प्राचीन सामाजिक व्यवस्था के दो अनमोल उपहार #लोक_स्वराज और #ज्ञानयज्ञ ही है। "सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहे।" आर्य समाज के 10वें नियम को अपने जीवन की बहुमूल्य पूंजी बताते हुए कहा कि भारतीय सनातन आर्य हिन्दू संस्कृति ही एकमात्र ऐसी संस्कृति है जो व्यक्ति को सहजीवन में रहते हुए असीम स्वतंत्रता की गारंटी दे सकती है। हिन्दुत्व अपने इस वैचारिक सौन्दर्य से सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन कर सकता है।

आर्यवीर दल के पांच दिवसीय बालक एवं बालिका प्रशिक्षण शिविर के शिविरार्थियों के वीरतापूर्ण प्रदर्शन एवं गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के सुन्दर वेदपाठ ने आये हुए अतिथियों का मन मोह लिया। सभा ऐसे आयोजनों की एक श्रृंखला पूरे छत्तीसगढ़ प्रांत में आयोजित करेगी।

मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान के तत्वाधान में अमित ग्राम गुमानीवाला में 73वें संविधान संशोधन की आगे की राह और ग्राम स्वराज्य विषय पर 14 जनवरी 2024 शाम 3:00 बजे से चर्चा का आयोजन किया गया। MARGDARSHAK WEB LINK

संविधान विशेषज्ञ, विचारक श्री बजरंग मुनि जी की अध्यक्षता में मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान द्वारा ऋषिकेश में ग्राम स्वराज पर चर्चा का आयोजन किया गया।

चर्चा में मुख्य अतिथि की भूमिका में भोपाल चौधरी जी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष किसान मंच, जगदीश चौधरी जी (सदस्य विश्व जल परिषद फ्रांस, पर्यावरण विद्, गांव और गंगा बचाओ अभियान अध्यक्ष, भारतीय जल शिक्षक शोध संस्थान), विपिन पंत जी अमित ग्राम पार्षद, दीवान सिंह जी दिल्ली से पर्यावरणविद और

गंगा, गांव अभियान के सदस्य ने भाग लेकर इस विषय पर अपने महत्वपूर्ण विचार रखें। मंच संचालक के रूप में श्रीकांत जी और बृजेश राय जी उपस्थित रहे। चर्चा में श्री विजय शर्मा जी, श्री हरे कृष्णा पांडे जी, श्री सुरेश पांडे जी, श्री नागेंद्र दत्त रतुडी जी, श्री अतुल राय जी और श्री शैलेश पांडे जी उपस्थित रहे।

जूम मीटिंग के माध्यम से ग्राम स्वराज विषय के विशेषज्ञ तीसरी सरकार के संस्थापक अध्यक्ष डॉक्टर चंद्रशेखर प्राण जी, बिहार सरकार कॉलेज सेवा आयोग के एक्स चेयरमैन, प्रोफेसर जेपी सिंह जी और जल पुरुष के नाम से प्रख्यात मेग्सेस पुरस्कार से सम्मानित डॉ राजेंद्र सिंह जी उपस्थित रहे।

चर्चा के अंतर्गत ग्राम स्वराज और ग्राम सभा का अंतर लोक नियुक्त तंत्र और लोक नियंत्रित तंत्र का अंतर और ग्राम स्वराज जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। किस तरह से ग्राम सभाओं को संवैधानिक अधिकार मिले और लोकतंत्र में तंत्र द्वारा लोक के अधिकारों में हस्तक्षेप को काम किया जा सके इस विषय पर चर्चा हुई। यह विषय दिल्ली में बैठी हुई केंद्र सरकार से यह प्रश्न पूछता है। लोकतंत्र में शक्ति का जो पिरामिड उल्टा हो गया है अर्थात जो शक्ति ऊपर से नीचे की तरफ जा रही है उसे शक्ति को पुनः किस प्रकार से परिवार से केंद्र की तरफ मोड़ा जाए और गांव को अपनी आंतरिक, संवैधानिक, राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्था बनाने का अधिकार मिले इस विषय पर चर्चा की गई। किस तरह से न्याय व्यवस्था का विकेंद्रीकरण किया जाए और 73वें संविधान संशोधन में गांव को जो अधिकार मिलने थे वह अधिकार उन्हें वापस दिए जाएं ना कि उन अधिकारों पर भी तंत्र का ही नियंत्रण रहे इस विषय पर भी चर्चा हुई।

लोकतंत्र का राष्ट्रमंत्र बनेगा e-Vote **MARGDARSHAK WEB LINK**

इ-इंडिया, इ-पंचायत, इ-बिजनेस, इ-फिनांस, इ-कॉमर्स, इ-पेमेंट, इ-वेस्ट, इ-वीजा, इ-टिकट, तो इ-वोट क्यूं नहीं। बैलेट ज़माना गया, ईवीएम का युग आया, जिसमें बूथ भी वही है, पोलिंग टीम भी वही है, सुरक्षा बलों की तैनाती भी ऐसी ही है, राजनीतिक दलों की तैयारी भी वैसी है, संगठन भी वैसा ही है, और वैसा ही बूथ पर बैठने वाला हर पार्टी का बूथ इंजार्च, और बूथ के भीतर एक दूसरे के वोटरों पर नज़र रखने वाले .....। सब कुछ वैसा ही है, मेरे विचार से एक बात हुई, वो है वोटों की गिनती, जो कुछ घंटों में ही पूरी हो जाती है।

इस बीच इ-वोट एक दिलचस्प विचार है। जो आपको रोमांचित कर सकता है। बस इसमें एक डिजिटल पहचान की ज़रूरत होती है, जो कि आधार के रूप में आपके पास है। और एक स्मार्ट फोन की, वो भी शायद घर में किसी न किसी एक व्यक्ति के पास तो है ही। अब मान लिया कल को चुनाव आयोग

ईसीआई यानि इलेक्शन आफ इंडिया के नाम से फोन पे जैसा एक एप बना दे, जिसे आप अपने फोन के प्ले स्टोर से डाउनलोड कर लें।

.... अब वोट देने के लिए आपको सिर्फ एक काम करना होगा, एप पर क्लिक कीजिए, अगर लोकसभा में वोट डालना है तो लोकसभा को क्लिक कीजिए, अपना आधार नंबर डालिये, इतना करते ही आपके फोन पर ओटीपी आएगा, जो अपने आप भर जाएगा। इतना सा काम होते ही आपको वो पेज खुल जाएगा जिस पर आपको वोट करना है, जिसे आप पसंद करते हैं, उस पर क्लिक करते ही आपका वोट हो जाएगा। क्योंकि आपका आधार ही आपका वोट होगा। आपका आधार जैसे आपके बैंक अकाउंट से लिंक कर दिया गया है, वैसे ही चुनाव आयोग उसे आपके वोटर आईडी से भी लिंक कर देगा।

ये मेरी मोटी सी समझ जिसके मैने आपको ये समझाने की कोशिश की है, कि आपके पास अब वो तंत्र है, जिसके जरिए आप लोकतंत्र को अपनी मुट्ठी में रख सकते हैं। वरना भले ही ईवीएम आ गया हो, लेकिन फर्जी वोट को हम आज भी नहीं रोक पाए हैं। मसलन, मेरे बूथ पर जाने से पहले मेरा फर्जी वोट हमेशा डाला गया है।

हमें एक फुलप्रूफ़ लोकतंत्र की ओर जाना होगा, जिसमें वोट का फर्जीवाड़ा ना हो। वो सरल हो, आपकी मुट्ठी में हो, उसके लिए आपको भरी दोपहर लाइन में ना लगना पड़े। ये संभव है। सरकार इसकी पहल करे, उससे पहले हमें इसके प्रयोग करने होंगे। एक प्रयोग मेरे ध्यान में है।

आओ करके देखें...

तो चलो इस प्रयोग में हम हर परिवार को एक बूथ मान लेते हैं, और परिवार के एक प्रतिनिधि को पोलिंग एजेंट, और मबप के नाम से एक एप बना लेते हैं, इसे आपको अपने प्ले स्टोर से डाउनलोड करना होगा। फिलहाल, इसका उद्देश्य होगा, सरकार और समाज के बीच एक सेतु यानि माध्यम का काम करना। इस प्रयोग को कम से कम 20 सप्ताह के लिए किया जाना चाहिए।

करना क्या है ?

इसे करने के लिए कोर टीम का गठन किया जाए, जो राष्ट्रीय और राज्य स्तर से जुड़ी समस्याओं के समाधान को लेकर लोगों के प्रस्ताव ले। राष्ट्रीय, और हर राज्य के स्तर पर हर हफ्ते, एक समाधान को इस एप पर अपलोड किया जाए, ये सबसे पहले एक एडमिन को आएगा, जहां प्रस्ताव की ग्रामर को ठीक कर, उसे चैप जीपीटी के जरिए हर भाषा मे अनुवाद कर, सब्मिट कर दिया जाए ताकि सब लोग पढ़ सकें।

अब हर परिवार का प्रतिनिधि इस पर अपने परिवार के हर वोटर का ई-वोट दे देगा। ररिवार को ही प्रस्ताव अपलोड होगा, और अगले रविवार दोपहर

12 बजे तक उसे लेकर डिस्कशन, डिबेट और वोट देने का सिलसिला चलता रहेगा। ''हर व्यक्ति को उसका अलर्ट मिलता रहेगा कि ''लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए अपना वोट रविवार दोपहर 12 बजे तक दे दें।''

अगला रविवार आते ही ठीक 12 बजे मीडिया के सामने जनसंसद का प्रवक्ता सरकार को ये बता दे कि राष्ट्रीय और राज्यों से किस किसी प्रस्ताव पर कितने लोगों ने वोट दिया है। साथ ही अगले हफ्ते के लिए जो प्रस्ताव आए हैं, उनमें से क्यू में लगे दूसरे प्रस्ताव को अपलोड कर दिया जाए, जिस पर अलगे हफ्ते के लिए वोट देने सिलसिला शुरू हो। इन 20 हफ्तों मे होने वाला ये प्रयोग स्वंय सिद्ध कर देगा कि सरकार लोगों की बातों को कितना सुनती है, और कितना अमल में लाती है।

वोट क्यूं करेंगे लोग

... परंतु एक सवाल है,वो ये कि लोग वोट क्यूं देंगे, लोग ईसीआई एप को अपने अपने फोन में डाउनलोड भी क्यूं करेंगे? ये वाजिब सवाल हैं, परंतु इसके लिए हमें तीन काम और करने होंगे, और बस काम हो जाएगा।

पहला देश के अलग अलग क्षेत्रों के राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त करीब 500 लोगों में से 100 लोगों को इस पहल के लिए सहमत करना। दूसरा पंचायत से लेकर पार्लियामेंट तक शासन के हर स्तर पर जनसंसद का गठन करना। मसलन, हर लोकसभा क्षेत्र से एक एक सिविल एमपी, विधानसभा क्षेत्र से सिविल एमएलए, ऐसे ही सिविल मेयर, सिविल पार्षद, ऐसे ही गांव तक।

तीसरा, इसी के साथ सच्चे लोकतंत्र को स्थापित करने के लिए लोकतंत्र सेनानी संघ या कोई भी नाम देते हुए एक संगठन जो लोकतंत्र में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करें। बूथ में सबका वोट पड़े, हर परिवार प्रतिनिधि से संपर्क रखते हुए ये सुनिश्चित करें।

मै इस लेख के जरिए लोकतंत्र की काया पलट का संकेत देने की कोशिश कर रहा हूं, साथ ही ये अपील भी कर रहा हूं कि देश की व्यवस्थाओं को नई पीढ़ी को सौंप दें क्योंकि तकनीक के दौर में पैदा हुई है, ये नया युग है, इस युग में संचार और तकनीक जैसे हथियार भी उसके हैं, बस उसके मार्गदर्शन की ज़रूरत है कि वो इन हथियारों का उपयोग कैसे करे कि वो भविष्य के भारत का भाग्यविधाता बन जाए।

रामवीर श्रेष्ठ

लेखक संसद टीवी में वरिष्ठ पत्रकार हैं और दलविहीन लोकतांत्रिक प्रणाली के लिए लिखते रहते हैं।

भावी भारत का संविधान	वर्तमान संविधान की खामियों एवं उसके निराकरण का सुंदर विश्लेषण करती, देशभर के तमाम विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के साथ निरंतर 20 वर्षों तक शोध के उपरांत लिखी इस पुस्तक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अब तक तीन बार इसे अलग–अलग संस्थानों के द्वारा छपवाया जा चुका है।
सहयोग राशि ₹50	
मुनि मंथन निष्कर्ष	श्रद्धेय मुनि जी के 70 वर्षों तक देशभर के मूर्धन्य विद्वानों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर 'विचार मंथन' के निष्कर्षों को सूत्र रूप में समेटे, इस पुस्तक को तैयार होने के बाद भी 4 वर्षों तक इसमें संकलित सिद्धांतों पर देशव्यापी विमर्श के उपरांत यह पुस्तक आपके सामने आ पाई है।
सहयोग राशि ₹50	
मौलिक व्यवस्था का विचार	यह पुस्तक 'व्यवस्था' पर तमाम वैश्विक संदर्भों के आधार पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। समाज के प्रत्येक इकाई के स्वतंत्रता सुरक्षा के साथ पोषण की गारंटी पर एक रिसर्च मॉडल के रूप में है यह पुस्तक है।
सहयोग राशि ₹50	
बस अब बहुत हो चुका	व्यवस्था की खामियों एवं उसके समाधान के लिए आवश्यक प्रभावी विचार एवं उद्दीपक ऊर्जा को अपने में समेटे इस पुस्तक को लिखा है अशोक गाड़िया जी ने। यह पुस्तक 'व्यवस्था परिवर्तन' के वैचारिक पृष्ठभूमि को तैयार करती है।
सहयोग राशि ₹50	
मुनि मंथन	श्रद्धेय मुनि जी के विचारों को गागर में सागर सा अपने में समेटे सीधे सरल समझ में आने वाली शैली में लिखी यह पुस्तक, एक रंगकर्मी निर्देशक निर्माता एवं लेखक आनंद गुप्ता जी की रचना है। शराफत से समझदारी की ओर जाने वाले मार्ग का पथ प्रदर्शक के रूप में या पुस्तक पठनीय है।
सहयोग राशि ₹10	
रामानुजगंज एक आवाज	अपने में श्रद्धेय बजरंग मुनि जी के जीवन की झलक समेटे इस पुस्तक को श्री नरेंद्र जी ने नाटक की शैली में लिखा है। सामाजिक समस्याओं एवं उसके निराकरण पर पात्रों के माध्यम से यथार्थ को नए रंग रोगन में प्रस्तुत करती है यह पुस्तक।
सहयोग राशि ₹10	
एक ही रास्ता	नुक्कड़ नाटक गीत संगीत जैसे सांस्कृतिक विधाओं से लोगों को समझदार बनने की प्रेरणा देने के लिए मुनि जी ने अपनी युवावस्था से ही प्रयास शुरू कर दिए थे। उन तमाम गीतों एवं दृश्यों को नाटक के रूप में इस पुस्तक में लिपिबद्ध किया गया है।
सहयोग राशि ₹10	

इन पुस्तकों का एक सेट मंगाने के लिए मात्र ₹100 का आर्थिक सहयोग और अतिरिक्त डाक खर्च देना होगा। इन पुस्तकों को एक साथ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–8318621282, 7869250001, 9617079344

हमारी संस्थाएँ

■ मार्गदर्शक समाजिक शोध संस्थान ■ ज्ञानयज्ञ परिवार

संस्थान के कार्य ■ समाज विज्ञान पर विश्वव्यापी रिसर्च तथा निष्कर्ष निकालना।

परिवार का कार्य

■ देश भर में ज्ञान केन्द्रो का इस तरह विस्तार हो कि वहाँ स्वतंत्र विचार मंथन हो तथा संवाद प्रणाली विकसित हो।

कार्यक्रम

■ ज्ञान चर्चा –प्रतिदिन शाम साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक किसी एक पूर्व घोषित विषय पर स्वतंत्र वेबिनार।

■ महायज्ञ – वर्ष में एक बार या दो बार बड़े सामुहिक यज्ञ का आयोजन।

■ मार्गदर्शक मंडल – ऐसे न्यूनतम पाँच सौ लोगों की टीम तैयार करना जो समाज विज्ञान पर रिसर्च करने की क्षमता रखते हैं।

■ ज्ञान कुंभः– वर्ष मे दो बार पंद्रह–पंद्रह दिनो के ज्ञान कुंभ जिसमें मार्गदर्शक मंडल के लोग स्वतंत्र विचार द्वारा प्रतिदिन दो–दो विषयों पर निष्कर्ष निकाल कर समाज को दें।

माध्यम

- ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका
- यू टयूब चैनल
- फेसबुक एप से प्रसारण
- इंस्टाग्राम
- वॉट्सऐप ग्रुप से प्रसारण
- टेलीग्राम
- जूम एप पर वेबिनार
- कू एप

ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का माह में दो प्रति का प्रकाशन सुचारू रूप से होना शुरू हो गया है इसकी सहयोग राशि रू. 100/- वार्षिक अभी तय किया गया है लेख प्रस्तुती आदि पर सुझाव अवश्य दें।

पंजीकृत पाक्षिक
पंजीकरण क्रमांक–68939/98

डाक पंजीयन क्रमांक–छ.ग./रायगढ़/10/209–2021

प्रति,

श्री/श्रीमती _____

_____

_____

_____

संदेश

वर्तमान संसदीय लोकतंत्र में तो संसद एक जेल खाना है। जहां हमारा भगवान रूपी संविधान कैद है। भगवान को जेलखाने से मुक्त कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना ही होगा। लोक संसद के लिये आंदोलन इसका प्रारंभिक चरण है। लोक स्वराज्य मंच ने इसकी पहल की है। लोक स्वराज्य मंच से जुड़िये और अपने भगवान को जेलखाने से मुक्त कराने की पहल कीजिए।

पत्र व्यवहार का पता

पता – बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बॉक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492021
website : www.margdarshak.info

प्रकाशक, सम्पादक व स्वामी – बजरंगलाल
09617079344
Email : bajrang.muni@gmail.com
Support@margdarsgak.info
Facebook Id : **बजरंग मुनि** (User Name)

मुद्रक– माया प्रेस रामानुजगंज, सरगुजा (छ.ग.)